भौतिकवाद (Materialism) वह दार्शनिक सिद्धांत है जिसके अनुसार विश्व का मूल आधार जड़ (Matter) या जड़ तत्व है। यही भौतिक जड़ ही विश्व के नाना पदार्थों की उत्पत्ति होती है।

भौतिकवाद के कुछ सामान्य गुण या विशेषता है —

→ विनाशपूर्ण
→ देशकाल में फैलना
→ अचेतन
→ अनीश्वरवादी
→ वस्तुवादी
→ यंत्रवादी

→ भौतिकवाद को मानने वालों में प्रमुख रूप से — थेलिज (जल) एनैक्सिमेंडर (असीमित/अपरिमेय), एनैक्सिमेनीज (वायु) हेराक्लाइटस (अग्नि) एम्पेडोकल्स (चार परमाणु पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि) ल्युकिप्पस (परमाणु) प्रमुख रूप से आते हैं। भारतीय दर्शन में एक मात्र चार्वाक भौतिकवाद है।

→ Metaphysics शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम एन्ड्रोनिकस (Andronicus) ने किया।

→ ontology शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम सी. वुल्फ (C. Wolff) ने किया।

→ Metaphysics and ontology दोनों शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ में होता है।

→ અધ્યાત્મવાદ યા પ્રત્યયવાદ (Idealism)

અધ્યાત્મવાદ ભૌતિકવાદ કા વિરોધી સિદ્ધાંત હૈ। અધ્યાત્મવાદ માનતા હૈ કિ મૂલ સત્તા ચેતન સ્વરૂપ યા અધ્યાત્મ-સ્વરૂપ હૈં ઔર સબ કુછ ઉસી કા પ્રતિફલ હૈ। યા તો ઉસકી અભિવ્યક્તિ હૈ। ઇસે હી પ્રત્યય (Idea), આત્મા (Self) યા મન (Mind) ભી કહા જાતા હૈ।

→ મૂલ તત્ત્વ આધ્યાત્મિક હોને સે તત્ત્વતઃ બાહ્ય વિશ્વ ભી આધ્યાત્મિક યા વિચારાત્મક અર્થાત્ અભૌતિક હૈ। યદિ કોઈ પદાર્થ ભૌતિક લગતા હૈ તો વહ પ્રતીતિ (Appearance) માત્ર હૈ, વાસ્તવિક નહીં। પ્રત્યયવાદ કા દાવા હૈ કિ જો ભૌતિક જાન પડતા હૈ વહ ભી પ્રત્યયાત્મક (of the nature of Ideas) હૈ, આત્મા યા મન કા વિકાર હૈ।

→ પ્રત્યયવાદ કી પ્રમુખ વિશેષતા —

→ અપ્રકૃતિવાદી
→ ચેતનાવાદી
→ પ્રયોજનવાદી

→ પાશ્ચાત્ય પ્રત્યયવાદ કે તીન રૂપ હોતે હૈં —

(1) આત્મનિષ્ઠ પ્રત્યયવાદ (Subjective Idealism) - બર્કલે
ભારતીય મત મેં - બૌદ્ધ કા યોગાચાર મત

(2) વસ્તુનિષ્ઠ પ્રત્યયવાદ (Objective Idealism) - પ્લેટો

(3) નિરપેક્ષ પ્રત્યયવાદ (Absolute Idealism) - હેગેલ
ભારતીય મત મેં શંકર કા અદ્વૈતવાદ

* દ્વૈતવાદ —

ઇસ મત કે અનુસાર મૂલ તત્ત્વ જડ ઔર ચેતન દોનોં હૈ। ઇસ મત કો માનને વાલોં મેં ભારતીય દર્શન મેં સાંખ્ય દર્શન ઇસકે ઉદાહરણ હૈ તથા પાશ્ચાત્ય દર્શન મેં દેકાર્ત કા દર્શન ઇસકા પ્રમુખ ઉદાહરણ હૈ।

* અનુભયવાદ — ઇસકે અનુસાર મૂલ તત્ત્વ કી પ્રકૃતિ કો ન જડ, ન ચેતન, બલ્કિ દોનોં સે ભિન્ન અનુભય (Neutral) માનતા હૈં। અનુભયવાદ કે પ્રવર્તક વિલિયમ જેમ્સ કો માના જાતા હૈ। મૈક ઔર એવેનેરિયસ ભી ઇસી મત કો માનતે હૈં।

ज्ञानमीमांसा (Epistemology)

दर्शन की जिस शाखा के अन्तर्गत ज्ञान क्या है? ज्ञान प्राप्ति के कितने साधन हैं आदि विषयों का अध्ययन किया जाता है उसे प्रमाण विज्ञान या ज्ञानमीमांसा कहा जाता है।

भारतीय दर्शन में ज्ञान प्राप्ति के साधन को लेकर सभी सम्प्रदायों के बीच मतभेद है।

चार्वाक :- प्रत्यक्ष
बौद्ध :- प्रत्यक्ष, अनुमान
वैशेषिक :- प्रत्यक्ष, अनुमान
सांख्य - प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
योग :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
विशिष्टाद्वैत :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
जैन :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
न्याय :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान
मीमांसा (प्रभाकर) :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति
मीमांसा (कुमारिल) :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि/अभाव
वेदान्त :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति तथा अनुपलब्धि

→ अन्य वेदान्ती संभव और ऐतिह्य को भी प्रमाण मानते हैं।

→ तान्त्रिक दार्शनिक चेष्टा को भी एक स्वतंत्र प्रमाण मानते हैं।

→ संभव प्रमाण - अनुमान के अन्तर्गत आता है जैसे - यह ज्ञान संभव हो जाता है कि जिसके पास सौ रुपया है, उसके पास पचास रु. भी होगा।

→ ऐतिह्य - यह शब्द प्रमाण के अन्तर्गत है वक्ता का नाम अज्ञात है, यह किंवदन्ती है - जैसे इस पेड़ में भूत रहता है।

→ ऐतिह्य का अर्थ है परम्परा या पौराणिक उपदेश।

→ चेष्टा - यह अनुमान के अन्तर्गत आता है। जैसे - हाथ से इशारा करके (चेष्टा से) किसी वस्तु का ज्ञान कराना जैसे - यह ठीक है।

पाश्चात्य दर्शन में ज्ञान प्राप्ति के साधन को लेकर तीन सिद्धांत आते हैं: —

1. बुद्धिवाद (Rationalism)
इसे मानने वालों में - देकार्त, स्पिनोजा, तथा लाइबनित्ज आते हैं।

2. अनुभववाद (Empiricism)
इसे मानने वालों में - लॉक, ह्यूम और बर्कले आते हैं।

3. समीक्षावाद (Criticism) इसे मानने वालों में प्रमुख रूप से कांट आते हैं।

* बुद्धिवाद - यह ज्ञान-मीमांसीय सिद्धान्त है. जिसके अनुसार वास्तविक और सत्य ज्ञान की प्राप्ति बुद्धि द्वारा हो सकती है, इन्द्रियाँ इसके साधन हैं नहीं। बुद्धि द्वारा प्राप्त ज्ञान अनिवार्य एवं सार्वभौम (Necessary & Universal) होता है। सार्वभौम होने का अर्थ है कि वह सभी देश और काल के पदार्थों के विषय में सत्य होता है, उसकी सत्यता किसी देश विशेष या काल विशेष तक सीमित नहीं है। तथा अनिवार्य का मतलब है उसकी सत्यता का निराकरण नहीं हो सकता। अतः उसका अपवाद या विपरीत सत्य नहीं हो सकता है। ये ज्ञान जन्मजात प्रत्यय/सहज प्रत्यय (Innate Ideas) के द्वारा निगमनात्मक विधि से प्राप्त होता है।

* अनुभववाद - यह बुद्धिवाद का विरोधी सिद्धांत है. इसके अनुसार जन्म के समय मानव मस्तिष्क साफ स्लेट कोरा कागज के समान होता है जिस पर कुछ भी अंकित नहीं होता है सभी ज्ञान इन्द्रिय अनुभव के द्वारा प्रत्यय रूप में प्राप्त होते हैं। अनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान में नवीनता होती है, तथा यह आगमनात्मक विधि से प्राप्त होता है।

* समीक्षावाद - ज्ञान प्राप्ति के साधन के रूप में बुद्धिवाद एवं अनुभववाद दोनों को एकांगी मानता है और कहता है कि ज्ञान प्राप्ति के लिए बुद्धि और अनुभव दोनों आवश्यक है, क्योंकि बुद्धि द्वारा प्राप्त ज्ञान में अनिवार्यता एवं सार्वभौमिकता होती है तथा अनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान में नवीनता होती है। ज्ञान के लिए दोनों आवश्यक हैं। अतः ज्ञान प्राप्ति में दोनों का समान योगदान है।